❍ 22 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗सबको घर का रास्ता बताया ?∗

➢➢ ∗ट्रस्टी होकर सब कुछ संभाला ?∗

➢➢ ∗संपर्क समबन्ध में आते सदा संतुष्ट रहे ?∗

➢➢ ∗पुराने स्वभाव संस्कार के वंश का अभी त्याग किया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है, वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव होना चाहिए। ∗इस आत्म - अभिमानी स्थिति से सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे। यही स्थिति विजयी माला का दाना बना देगी।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बाप के साथ द्वारा साक्षी स्थिति का अनुभव करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो, हर कर्म करते हो? जो साक्षी हो कर्म करते हैं उन्हें स्वत: ही बाप के साथी-पन का अनुभव भी होता है। साक्षी नहीं तो बाप भी साथी नहीं इसलिए सदा साक्षी अवस्था में स्थित रहो। *देह से भी साक्षी जब देह के सम्बन्ध और देह के साक्षी बन जाते हो तो स्वत: ही इस पुरानी दुनिया से साक्षी हो जाते हो।*

〰✧ देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारे और प्यारे। यही स्टेज सहज योगी का अनुभव कराती है - तो सदा साक्षी इसको कहते हैं साथ में रहते हुए भी निर्लेप। *आत्मा निर्लेप नहीं है लेकिन आत्मअभिमानी स्टेज निर्लेप है अर्थात माया के लेप व आकर्षण से परे है। न्यारा अर्थात निर्लेप।* तो सदा ऐसी अवस्था में स्थित रहते हो?

〰✧ किसी भी प्रकार की माया का वार न हो। *बाप पर बलिहार जाने वाले माया के वार सदा बचे रहेंगे। बलिहार वालों वार नहीं हो सकता।* तो ऐसे हो ना? जैसे फर्स्ट चाँस मिला है वैसे ही बलिहार और माया के बार से परे रहने में भी फर्स्ट। फर्स्ट का अर्थ ही है फास्ट जाना। तो इस स्थिति में सदा फर्स्ट। सदा खुश रहो, सदा खुश नशीब रहो।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आप लोग एक चित्र दिखाते हो ना! साधारण अज्ञानी आत्मा को कितनी रस्सियों से बंधा हुआ दिखाते हो। वह है अज्ञानी आत्मा के लिए लोहे की जंजीरा मोटे-मोटे बंधन हैं। लेकिन *ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के बहुत महीन और आकर्षण करने वाले धागे हैं।*

〰✧ *लोहे की जंजीर अभी नहीं है, जो दिखाई देवे बहुत महीन भी है, रॉयल भी है।* पर्सनैलिटी फील करने वाले भी है, लेकिन वह धागे देखने में नहीं आते, अपनी अच्छाई महसूस होती है।

〰✧ अच्छाई है नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती है कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा देख रहे थे - *यह जीवन बन्ध के धागे मैजारिटी में हैं।* चाहे एक हो, चाहे आधा हो लेकिन जीवनमुक्त बहुत थोडे देखे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अपने को चलते-फिरते लाइट के कार्ब के अन्दर आकारी फ़रिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फ़रिश्ते के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाइट स्वरूप आत्मा और लाइट के आकारी स्वरूप फ़रिश्ते स्वरूप में अनुभव करते हो? *बापदादा दोनों के समान बनना है ना? दोनों से स्नेह है ना? स्नेह का सबूत है- समान बनना। जिससे स्नेह होता है तो जैसे वह बोलेगा वैसे ही बोलेगा। स्नेह अर्थात् संस्कार मिलाना और संस्कार मिलन के आधार पर स्नेह भी होता। संस्कार नहीं मिलता तो कितना भी स्नेही बनाने की कोशिश करो, नहीं बनेगा। तो दोनों बाप के स्नेही हो ?* बाप समान बनना अर्थात् लाइट रूप आत्मा स्वरूप में स्थित होना और दादा समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता। *दोनों बाप को स्नेह का रिटर्न देना पड़े। तो स्नेह का रिटर्न दे रहे हो? फ़रिश्ता बन कर चलते हो कि पाँच तत्वों से अर्थात् मिट्टी से बनी हुई देह अर्थात् धरनी अपने तरफ आकर्षित करती?* जब आकारी हो जायेंगे तो यह देह (धरनी) आकर्षित नहीं करेगी। बाप समान बनना अर्थात् डबल लाइट बनना। दोनों ही लाइट हैं? वह आकारी रूप में, वह निराकारी रूप में। तो दोनों समान हो ना? *समान बनेंगे तो सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार, कभी जीत- इसी हलचल में होंगे। अचल बनने का साधन है समान बनना।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- देही अभिमानी बन याद से विकर्म विनाश करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने भाग्य पर नाज करती हुई मधुबन बाबा की कुटिया में बैठ जाती हूँ... और बाबा को एकटक निहारती रहती हूँ... प्यारे बाबा की याद में खो जाती हूँ... बाबा के नैनों से जादुई किरणें निकलकर मुझ पर पड रही हैं... *बाबा की इन जादुई किरणों से मुझ आत्मा का देह लोप हो गया है और मैं आत्मा फ़रिश्ता स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ...* प्यारे बाबा मुझे अपने साथ बाहर लेकर जाते हैं और झूले पर बिठाकर झूला झूलाते हुए प्यार भरी बातें करते हैं...

❉ *प्यारे बाबा अपनी प्यार भरी मुस्कान से मुझ आत्मा को निहाल करते हुए कहते है:-* “मेरे मीठे फूल बच्चे... देह के भान में आने से ही विकारो में फंस गए और दुखो के घने जंगल में गुमराह से हो गई... अब मीठे बाबा के रूहानी संग में रुह का अभ्यास करो... *अपने सतरंगी रंगो का श्रृंगार करो और सतयुग के अथाह सुखो में मुस्कराते हुए शान से रहो...”*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा देहभान से मुक्त होकर देही अभिमानी स्थिति का अनुभव करते हुए कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा आपकी श्रीमत को थामे देहभान के दलदल से बाहर निकल दुखो से मुक्त हो गई हूँ...* अपने सुंदर स्वरूप को बाबा से जानकर मै आत्मा मीठे बाबा पर मुग्ध हो गयी हूँ... और उनके मीठे प्यार में खो गयी हूँ...”

❇ *मीठे बाबा मेरा सतरंगी श्रृंगार कर कौड़ी से हीरे तुल्य बनाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मिटटी के मटमैलेपन ने पापो से लथपथ कर दिया... खुबसूरत सितारे अपने वजूद को खोकर धुंधले हो गए... *अब अपने सच्चे स्वरूप सच्ची चमक को मीठे पिता के साये में फिर से पा लो और 21 जनमो तक सुख आनन्द से लबालब हो जाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सुन्दर कमल फूल समान खिलकर अपनी रंगत चारों ओर फैलाते हुए कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा अब सारे विकराल दुखो को भूल अपने सच्चे सौंदर्य में खिल उठी हूँ... *मै यह देह नही खुबसूरत प्यारी और पिता की दुलारी आत्मा हूँ इस नशे से भर गई हूँ...* और खजाने पाकर मालामाल हो गयी हूँ..."

❇ *मेरे बाबा मुझ आत्मा के 63 जन्मों के विकर्मो को भस्म कर सच्चा सोना बनाते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *अपने आत्मिक स्वरूप को जितना यादो में ले आओगे उतना ही निखरते जाओगे... देह के भान में किये सारे विकर्मो से सहज ही मुक्त होते जायेंगे...* और सुखो के अम्बार अपने कदमो में बिछे पाओगे... पूरा विश्व आपका और आप मालिक बन मुस्करायेंगे..."

➳ _ ➳ *मैं देही अभिमानी आत्मा देह के सर्व बन्धनों से मुक्त होकर खुशियों के गीत गाती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मै आत्मा कितनी खुशनसीब हूँ कि स्वयं ईश्वर पिता मुझे सच बता रहा...* मीठे पिता की गोद में मै आत्मा कितनी सुखी होकर बैठी हूँ... और शरीर के झूठे भ्रम से निकल कर अपने आत्मिक स्वरूप को पाकर सच्ची खुशियो से भर उठी हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"डिल :- श्रीमत पर खदार्ड खिदमतगार बनना है*"

➳ _ ➳ 5 विकारों रूपी माया रावण की जेल में कैद सभी आत्मा रूपी सीताओं को इस जेल से छुड़ाये, उन्हें सेल्वेज करने के लिए स्वयं जगत के नियन्ता प्रभु राम अर्थात *परम पिता परमात्मा शिव बाबा ने आकर जो ईश्वरीय सेल्वेशन आर्मी बनाई है, उस ईश्वरीय सेल्वेशन आर्मी का प्रमुख सैनिक और अपने प्रभु राम का सच्चा - सच्चा खुदाई खिदमतगार बन सभी आत्मा रूपी सीताओं को रावण की कैद से छुड़ाना और सबको माया से लिबरेट करना हर ब्राह्मण बच्चे का मुख्य कर्तव्य है*।

➳ _ ➳ इस बात को स्मृति में लाकर अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप को धारण कर, सच्चा - सच्चा खुदाई खिदमतगार बन सबको माया से लिबरेट करने के, अपने खुदा बाप के फरमान का पालन करने के लिए मैं उड़ चलता हूँ ऊपर की ओर। *सारे विश्व मे भ्रमण करते हुए मैं देख रहा हूँ विश्व की सर्व आत्माओं को जो विकारों की अग्नि में जल रही हैं। माया रावण के चंगुल से छूटने का भरसक प्रयास कर रही हैं किन्तु सामर्थ्य ना होने के कारण उसके आकर्षक जाल में और ही फँस कर दुर्गति को पाती जा रही हैं*।

➳ _ ➳ अपने इन सभी आत्मा भाइयों को माया से लिबरेट करने के लिये अब मैं अपने प्यारे बापदादा का आह्वान करती हूँ। *बापदादा के साथ कम्बाइंड हो कर, विश्व ग्लोब पर बैठ, बापदादा से सर्वशक्तियाँ ले कर अब मैं विश्व की सर्व आत्माओं में प्रवाहित कर रही हूँ*। 5 विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में जल रही आत्माओं पर ये शक्तियां शीतल फुहारों के रूप में बरस कर विकारों की अग्नि को शांत कर, उन्हें शीतलता का अनुभव करवा रही है। *शीतलता की यह अनुभूति उन्हें सुकून दे रही हैं। सर्व आत्माओं को परमात्म सन्देश और परमात्म परिचय मिल रहा है*।

➳ _ ➳ सच्चा सच्चा खुदाई ख़िदमतगार बन विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्म परिचय दे कर, उन्हें माया से लिबरेट होने का सहज रास्ता बता कर, अब मैं स्वयं को परमात्म बल से भरपूर करने के लिए अपने निराकारी स्वरूप में स्थित होकर अपनी निराकारी दुनिया की ओर चल पड़ती हूँ। *विश्व ग्लोब से ऊपर, सक्ष्म वतन को पार कर मैं पहंच जाती हूँ निराकारी आत्माओं की दनिया

परमधाम में। परमधाम में अपने मीठे प्यारे शिव बाबा के सानिध्य में बैठ अब मैं स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे बाबा अपनी सारी शक्तियाँ मुझ आत्मा में भरकर अपनी समस्त पावर मेरे अंदर समाहित कर रहे हैं ताकि *संपूर्ण ऊर्जावान बन मैं विश्व की सर्व आत्माओं को, जो 5 विकारों रूपी माया रावण की जेल में फंस कर दुखी हो रही हैं और उसकी कैद से छूटने के लिए छटपटा रही हैं, उन सबको माया से लिबरेट कर, परमात्म शक्तियों से उन्हें बलशाली बना कर विकारों से मुक्त होने का बल उनमें भर सकूँ*।

➳ _ ➳ परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, सम्पूर्ण ऊर्जावान बन अब मैं परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और साकारी दुनिया मे आकर अपने साकारी तन में प्रवेश कर, अपने ब्राह्मण स्वरूप को धारण कर लेती हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होकर सच्चा - सच्चा खुदाई ख़िदमतगार बन, अपने शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति से, सबको माया से लिबरेट करने की ऑन गॉडली सर्विस पर अब मैं सदैव तत्पर रहती हूँ*। सेल्वेशन आर्मी बन सबको विकारों की दुबन से निकाल उन्हें सेल्वेज करने का रूहानी धन्धा अब मैं हर समय कर रही हूँ।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सम्पर्क सम्बन्ध में आते सदा संतुष्ट रहने और संतुष्ट करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं गुप्त पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा पुराने स्वभाव-संस्कार के वंश का भी त्याग करती हूँ ।*
✺ *मैं सर्वश त्यागी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा को एक बात पर बच्चों को देख करके मीठी-मीठी हँसी आती है। किस बात पर? चैलेन्ज करते हैं, पर्चा छपाते हैं, भाषण करते हैं, कोर्स कराते हैं। क्या कराते हैं? हम विश्व को परिवर्तन करेंगे। यह तो सभी बोलते हैं ना! या नहीं? सभी बोलते हैं या सिर्फ भाषण करने वाले बोलते हैं? तो *एक तरफ कहते हैं विश्व को परिवर्तन करेंगे,मास्टर सर्वशक्तिवान हैं! और दूसरे तरफ अपने मन को मेरा मन कहते हैं, मालिक हैं मन के और मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। फिर भी कहते हैं मुश्किल है?* तो हंसी नहीं आयेगी! आयेगी ना हंसी! तो *जिस समय सोचते हो, मन नहीं मानता, उस समय अपने ऊपर मुस्कराना।*

➳ _ ➳ मन में कोई भी बात आती है तो बापदादा ने देखा है तीन लकीरें गाई हुई हैं। एक पानी पर लकीर. पानी पर लकीर देखी है. लगाओ लकीर तो

उसी समय मिट जायेगी। लगाते तो है ना! तो दूसरी है किसी भी कागज पर, स्लेट पर कहाँ भी लकीर लगाना और *सबसे बड़ी लकीर है पत्थर पर लकीर। पत्थर की लकीर मिटती बहुत मुश्किल है।* तो बापदादा देखते हैं कि कई बार बच्चे अपने ही मन में पत्थर की लकीर के मुआफिक पक्की लकीर लगा देते हैं। जो मिटाते हैं लेकिन मिटती नहीं है। ऐसी लकीर अच्छी है? *कितना वारी प्रतिज्ञा भी करते हैं, अब से नहीं करेंगे। अब से नहीं होगा। लेकिन फिर-फिर परवश हो जाते हैं। इसलिए बापदादा को बच्चों पर घृणा नहीं आती है, रहम आता है। परवश हो जाते हैं। तो परवश पर रहम आता है।*

✺ *ड्रिल :- "अपने मन के मालिक होने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्व स्वरूप का गहराई से चिंतन कर रही हूँ... *मैं अति सूक्ष्म जगमगाती, चमकती हुई प्रकाश की मणि हूँ... अपनी रूहानी दिव्य आभा फैलाती हुई, झिलमिल करती हुई मैं ज्योति का सितारा हूँ*... मैं दिव्य बुद्धि के नेत्रों से स्वयं को देख रही हूँ... मेरा औरा चारों ओर बढ़ता जा रहा है... मैं आत्मा चलती हूँ... अपने रूहानी घर की ओर... अपने मीठे प्यारे वतन की ओर... लाल प्रकाश की दुनिया में... यहाँ मैं आत्मा सर्व बंधनों से, सर्व हदों से मुक्त हूँ, स्वतंत्र हूँ...

➳ _ ➳ निर्वाण धाम, शांति धाम की असीम शांति मैं स्वयं में समाती जा रही हूँ... मैं आत्मा के सातों गुणों का स्वरुप बनती जा रही हूँ... निराकारी आत्माओं के झाड़ को मैं निहार रही हूँ... हर एक आत्मा यहां अपने संपूर्ण प्रकाशमय स्वरुप में जगमगा रही है... *झाड़ के बीज में मेरे प्यारे शिव बाबा बैठे हैं... मैं आत्मा बाबा के बिल्कुल समीप चली जाती हूँ... बाबा की गोदी में बैठ जाती हूँ...*

➳ _ ➳ सर्वशक्तिमान बाबा की शक्तियों रूपी सागर में... मैं आत्मा गहरे, गहरे और गहरे उतरती जा रही हूँ... परमात्म शक्तियां मुझ में समाती जा रही हैं... मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ... मैं स्व परिवर्तक सो विश्व परिवर्तक आत्मा हूँ... अपनी रूहानी स्थिति द्वारा समस्त विश्व में रूहानियत की खुशबू फैला रही हूँ... *मैं सर्वशक्तिमान बाबा की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ...

स्वराज्य अधिकारी हूँ... भृकुटी तख्त पर विराजमान हूँ... मैं आत्मा राजा हूँ... मालिक हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्थूल कर्मेन्द्रियों की, मन-बुद्धि-संस्कारों की मालिक हूँ... मैं आत्मा राजा मन को श्रीमत प्रमाण चला रही हूँ... *मैं आत्मा राजा अपनी शक्तिशाली स्थिति में मन मंत्री को आर्डर करती हूँ... और मन मंत्री मेरे आर्डर को सहर्ष स्वीकार कर रहा है... मेरा मन व्यर्थ और नेगेटिव से मुक्त होकर... समर्थ और श्रेष्ठ संकल्पों की रचना कर रहा है*... मेरे हर संकल्प में मजबूती है, दृढ़ता है... *मैं पत्थर की लकीर के समान अपने संस्कार परिवर्तन के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ मैं शक्तिशाली आत्मा बाबा की शक्तियों के फव्वारे के नीचे हूँ... उनसे शक्तियों की लाल-लाल किरणें मुझ आत्मा में समाती जा रही हैं... मैं संपूर्ण दृढ़ता से संस्कार परिवर्तन की रूहानी यात्रा पर आगे बढ़ रही हूँ... *मैं आत्मा राजा अपने श्रेष्ठ, शुभ संकल्पों को दृढ़ संकल्प और दृढ़ प्रतिज्ञा के जल से सींच रही हूँ... उन्हें मजबूती प्रदान कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔